आश्चर्यकर्मों से परमेश्वर के वचन की पुष्टि होती है

परमेश्वर द्वारा आश्चर्यकर्म के अद्‌भुत प्रयोग की किसी भी घटना में किसी को भी आश्चर्यकर्मों से पापों की क्षमा नहीं मिली! परमेश्वर ने आश्चर्यकर्मों का इस्तेमाल उद्धार देने के लिए कभी नहीं किया।

आश्चर्यकर्मों का इस्तेमाल बिना किसी विरोध के उन लोगों के मनों तक परमेश्वर के वचन को पहुंचाने के लिए किया गया जिन्होंने उन्हें देखा था। आश्चर्यकर्मों से कभी किसी का मन नहीं बदला बल्कि परमेश्वर की ओर से आए सत्य वचनों ने ही लोगों के हृदय बदले। बाइबल के छात्रों की यह अवधारणा हो सकती है कि बाइबल के इतिहास में हर जगह आश्चर्यकर्मों का इस्तेमाल होता रहा है। इसके विपरीत, वास्तव में आश्चर्यकर्मों ने केवल तीन महान युगों में, जिन्हें आसानी से परिभाषित किया जा सकता है, मनुष्य के साथ परमेश्वर के व्यवहारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

(1) मूसा के समय और काम के दौरान उन सभी आश्चर्यकर्मों को याद कीजिए जिनका इस्तेमाल परमेश्वर ने किया था। इब्राहीम के समय से लेकर यहोशू की अगुआई में कनान पर विजय के आरम्भ से तथा इस्राएल की स्थापना के लिए आश्चर्यकर्मों ने आधार बनाया। बहुत से आश्चर्यकर्म इस समय दर्ज किए गए हैं। प्रतिज्ञा किए हुए देश में अधिकार करने के शीघ्र बाद, आश्चर्यकर्म बंद होने लगे।

(2) आश्चर्यकर्मों का दूसरी बार फूटना महान भविष्यवक्ताओं के समय हुआ। एलिय्याह, अलीशा, यशायाह, दानिय्येल, यहेजकेल और अन्य भविष्यवक्ताओं के समय परमेश्वर ने बहुत से चिह्न और अद्‌भुत कार्य किए। पुराने नियम के इतिहास के अन्तिम भाग में आते-आते दासता के समय आश्चर्यकर्म फिर से कम हो गए।

(3) आश्चर्यकर्मों, चिह्नों और अद्‌भुत कामों का तीसरा शानदार प्रवाह अर्थात आरम्भ यीशु और उसके प्रेरितों की सेवकाई के साथ हुआ। उसके जीवन और कार्य के दौरान, बहुत से आश्चर्यकर्मों से यह प्रमाणित करने में सहायता मिली कि वह ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह, परमेश्वर का पुत्र है। सुसमाचार के रोमी साम्राज्य से आगे बढ़ने और पवित्र

आत्मा से प्रेरणा प्राप्त लोगों द्वारा नये नियम की पुस्तकें लिखने के साथ, आश्चर्यकर्म कम होते गए। वास्तव में, बाद के वर्षों में[1] लिखी गई नये नियम की पुस्तकों में मुश्किल से ही चिह्नों और अद्‌भुत कार्यों की घटनाओं या शिक्षाओं का उल्लेख मिलता है।

इन तीन कालों के बाद कभी-कभी आश्चर्यकर्म हुए, परन्तु आश्चर्यकर्मों की ''मूसलाधार वर्षा'' केवल इन तीन कालों में ही हुई। इन तीनों कालों में परमेश्वर अपना वचन संसार में प्रकट कर रहा था। संसार में सच्चाई के प्रकाशन के साथ आश्चर्यकर्मों का जोड़ कोई आकस्मिक नहीं था। बाइबल के छात्र आज यह देखने के लिए कि परमेश्वर ने अपने सच्चाई के वचन जो प्रकट किए जा रहे थे, उनका प्रयोग कैसे किया। इतिहास पर दूरबीन जैसी दृष्टि डाल सकते हैं। (1) मूसा को व्यवस्था दी गई, (2) भविष्यवक्ताओं को और प्रकाशन दिए गए जो मसीह के द्वारा आने वाले उद्धार की ओर इशारा करते थे, और (3) यीशु और उसके प्रेरित अन्तिम और सम्पूर्ण प्रकाशन अर्थात प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार लेकर आए। इस अध्ययन में नये नियम में यीशु की सेवकाई और कलीसिया के आरम्भिक दिनों के वृत्तांत में, आश्चर्यकर्मों की तीसरी मूसलाधार वर्षा पर ध्यान केन्द्रित रखा जाएगा।

आश्चर्यकर्मों की प्रतिज्ञा

यीशु ने एक छोटे से देश, फलस्तीन में केवल साढ़े तीन वर्ष तक शिक्षा दी। उसने शिक्षाओं को ग्रहण करने और भविष्य के भावी काम करने के लिए बारह मनुष्यों को चुना। उसने कहा कि वह उन्हें अकेला नहीं छोड़ेगा बल्कि इस पृथ्वी से जाने के बाद वह उनकी सहायता के लिए एक सहायक भेजेगा जिसे पवित्र आत्मा कहा जाएगा (यूहन्ना 14:25, 26)। इस व्यक्ति ने उन्हें उसकी सब शिक्षाओं को याद करने में सहायता करनी थी, क्योंकि निश्चय ही वे पूरी तरह से और सही-सही उन सब बातों को याद नहीं रख सकते थे जो तीन वर्षों के दौरान यीशु से सुनी थीं।

सहायक ने उन्हें परमेश्वर के शेष प्रकाशन के बारे में भी बताना था। आत्मा ने उनकी आत्मिक शिक्षा को पूर्ण करना था। यीशु ने प्रेरितों को सब कुछ पहले नहीं बताया था (यूहन्ना 16:4), क्योंकि वे इस पूरे प्रकाशन को सह नहीं सकते थे (यूहन्ना 16:12)। उसने उन शिक्षाओं के परिचय के लिए जो उस समय प्रेरितों के लिए बहुत गहरी थीं ''दृष्टांतों की भाषा'' (यूहन्ना 16:25) का इस्तेमाल किया। बाद में उचित समय पर, आरम्भिक चेलों को और शिक्षाएं देने के लिए उनकी आवश्यकता के अनुसार आत्मा ने उनके लिए परमेश्वर का वचन लाना था।

इन प्रतिज्ञाओं के साथ यीशु ने कहा कि ''विश्वास करने वालों'' (मरकुस 16:17) में चिह्न होंगे। इन चिह्नों से पुष्टि होनी थी कि वे क्या सिखा रहे थे ताकि सुनने वाले समझ जाएं कि उनकी शिक्षाएं परमेश्वर की ओर से ही थीं। इन चिह्नों में दुष्ट आत्माओं को निकालना, अन्य-अन्य भाषाएं बोलना, सांपों के काटने या विषैले ज़हर पीने से भी

कुछ हानि न होना और आश्चर्यजनक ढंग से बीमार लोगों को चंगा करना शामिल था (मरकुस 16:17, 18)।

बाइबल के बहुत से छात्र जिस तथ्य से चूक जाते हैं वह यह है कि मरकुस ने बिल्कुल वही लिखा कि कैसे इन आश्चर्यकर्मों का उपयोग हुआ! उनका उपयोग किसी भी रीति से उस प्रकार से नहीं हुआ जैसे आज आधुनिक ''चमत्कार करने वाले'' करने का दावा करते हैं। बल्कि, मरकुस 16:20 बताता है कि ये चिह्न लगातार परमेश्वर के प्रकट वचन की पुष्टि करने के लिए प्रयुक्त हुए थे।

आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य

परमेश्वर के वचन की पुष्टि करना

इन चिह्नों के बाद प्रेरितों की शिक्षा का कार्य हुआ, इसलिए जैसे कि प्रेरितों के काम में विशेष तौर पर ध्यान दिया गया है, हमें परमेश्वर द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों के उपयोग की समझ होनी चाहिए। ये अद्‌भुत कार्य मन बहलाने के लिए, सुनने वालों को चकाचौंध करने के लिए, इन्हें कर सकने वालों के घमण्ड को प्रोत्साहित करने के लिए, आर्थिक साम्राज्यों के लिए धन जुटाने या केवल बीमार लोगों की सहायता के लिए इस्तेमाल नहीं किए गए।

हर घटना में, परमेश्वर की ओर से सच्चाई के प्रकाशन के साथ अलौकिक शक्तियां थीं। प्रेरितों द्वारा मसीह के सुसमाचार की नई सच्चाइयों को पाने और सिखाने के साथ-साथ ऐसे काम किए गए जो प्राकृतिक जगत में कार्यों से बहुत ऊपर थे। इससे यह प्रमाणित होता है कि उन्हें परमेश्वर की ओर से सामर्थ मिली थी और इसलिए उनकी शिक्षा परमेश्वर की ओर से थी।

चिह्न यीशु में परमेश्वर के पुत्र के रूप में विश्वास उत्पन्न करने के लिए दिखाए गए थे। यूहन्ना ने बताया कि उसकी पुस्तक इसलिए लिखी गई थी ''कि तुम विश्वास करो'' (यूहन्ना 20:30, 31)। किसी आश्चर्यकर्म को देखकर कोई विश्वास नहीं कर सकता था कि यीशु नासरी परमेश्वर का पुत्र है जब तक उसे कोई प्रेरित यह न सुनाता। आश्चर्यकर्म सुसमाचार की शिक्षा के प्रमाण के लिए एक साक्षी थे।

सुसमाचार की यह नई बात पहले प्रभु ने बताई फिर प्रेरितों ने इसकी पुष्टि की। अन्त में, परमेश्वर ने अपनी इच्छा के अनुसार चिह्नों, अद्‌भुत कार्यों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के दान देने से इन सत्यों की पुष्टि की (इब्रानियों 2:3, 4)।

शिक्षाओं में सहमति दिखाने के लिए

प्रेरित एक दूसरे का विरोध नहीं करते थे, क्योंकि वे केवल उन्हीं सच्चाइयों का प्रचार करते थे जो परमेश्वर की ओर से उन पर प्रकट की गई थी। यदि दो प्रेरितों को आश्चर्यकर्म

करने के लिए परमेश्वर की ओर से सामर्थ मिली थी, तो उनकी शिक्षाएं भी, परमेश्वर की ओर से थीं, जो अब भी दी जा रही हैं। वास्तव में, यीशु ने पहले वायदा किया था कि ''जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं'' (मत्ती 18:20)। इस संदर्भ का, बिल्कुल उसी प्रकार इस्तेमाल करने पर पता चलता है कि प्रत्येक प्रेरित के पास ''स्वर्ग के राज्य की कुंजियां'' थीं जिन्हें देने का वायदा पहले केवल पतरस से किया गया था (मत्ती 16:19)। मत्ती 18:18 में यीशु ने संकेत दिया कि प्रत्येक प्रेरित को ''बांधने और खोलने'' की शक्ति मिलेगी। यह ''बांधना और खोलना'' प्रेरितों को मिलने वाले उस अधिकार को कहा गया है जो परमेश्वर की इच्छा को प्रकट करने के लिए उन्हें दिया गया था, जिसका निर्णय पहले ही स्वर्ग के सिंहासन में ले लिया गया था।

प्रेरितों ने शिक्षा सम्बन्धी सच्चाई पर अपनी ओर से कोई निर्णय नहीं लिया; उन्होंने पृथ्वी पर केवल वही बातें प्रकट कीं जिनका निर्णय स्वर्ग में पहले से ही ले लिया गया था। अपनी शिक्षा में ऐसी बातें प्रकट करके वे एक दूसरे के साथ सहमत थे। प्रभु की प्रकाशन देने वाली आश्चर्यजनक शक्ति उनके बीच थी। प्रभु ने हर एक पर एक ही सच्चाई को प्रकट किया।

''दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे ...'' होने वालों के मध्य होने का यीशु का वाक्य आराधना के लिए इकट्ठा होने वाले लोगों के लिए नहीं है, जैसे कि इसका आम तौर पर गलत इस्तेमाल होता है। इस वाक्य का अर्थ यीशु मसीह के नाम (अधिकार) प्रेरितों (आत्मा द्वारा उनके काम को नियन्त्रित करने में) का इकट्ठा होना है। उसका अधिकार सच्चाई के अनुरूप उनकी अगुआई करने के लिए उनके साथ होना।

उनकी शिक्षाओं में किसी भी प्रकार के विरोध का अर्थ होता कि उनमें से कोई न कोई ऐसा है जो वह शिक्षा नहीं दे रहा था जो परमेश्वर ने उन पर प्रकट की थी। सत्य में विरोधाभास नहीं होता। परमेश्वर का वचन सत्य है (यूहन्ना 17:17), और केवल सत्य में ही शुद्ध करने की शक्ति है। इसलिए, किसी को प्रेरितों और आत्मा की प्रेरणा प्राप्त नये नियम के लेखकों की शिक्षाओं में कोई विरोधाभास नहीं मिलता है।

आज चमत्कार करने का दावा करने वाले लोगों की शिक्षाएं एक दूसरे का विरोध करती हैं जो यह दिखाता है कि उनमें से कई या सभी सत्य का प्रचार नहीं कर रहे हैं। उनमें से कई अवश्य ही गलत होंगे और जो गलत हैं उन्हें सम्भवत: परमेश्वर की ओर से चमत्कार करने की योग्यता नहीं मिल सकती। परमेश्वर झूठे शिक्षकों को आश्चर्यकर्म करने की शक्ति नहीं देता।

आज बहुत से ''आत्मा से परिपूर्ण'' होने का दावा करने वाले लोग बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं का विरोध करते हैं। उनकी कुछ शिक्षाएं प्रभु की स्पष्ट शिक्षाओं का उल्लंघन हैं। परमेश्वर ऐसे झूठे प्रचारकों को सामर्थ नहीं देगा जो उसके ईश्वरीय वचन का विरोध करते हैं। आज यह जानने के लिए कि ''आश्चर्यकर्म'' करने वाले सचमुच परमेश्वर की ओर से चिह्न और अद्‌भुत कार्य कर रहे हैं या नहीं, का सरल सा ढंग उनकी शिक्षाओं को

परखना है। यदि उनकी शिक्षाएं बाइबल से मेल नहीं खाती हैं, अर्थात ''पवित्र पुस्तक में'' नहीं मिलती हैं, ताकि वे परमेश्वर की शक्ति से आश्चर्यकर्म नहीं कर रहे। यदि यह दावा करने वाले जो कुछ कर रहे हैं वह अलौकिक है या प्राकृतिक धारणाओं से उनकी व्याख्या नहीं की जा सकती, तो अगला निष्कर्ष यह है कि ये घटनाएं केवल शैतान की ओर से हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:8-10)। केवल शैतान ही है जो लोगों को इस प्रकार के चिह्नों और झूठे अद्‌भुत कार्यों से चक्कर में डाल सकता है। परमेश्वर झूठ की गवाही नहीं देता। यह शैतान का कार्य है, जो आरम्भ से ही झूठा है और वह हर प्रकार के झूठ का पिता है (यूहन्ना 8:44)।

सिखाने में सहायता के लिए

आरम्भिक कलीसियाओं में नौ चमत्कारी दानों का इस्तेमाल होता था (1 कुरिन्थियों 12:8-10)। इन दानों में बुद्धि, ज्ञान, चंगा करने का वरदान, सामर्थ के काम करने की शक्ति, भविष्यवाणी, आत्माओं की परख, अनेक प्रकार की भाषा, और भाषाओं का अनुवाद शामिल थे। दिलचस्प बात यह है कि *इन नौ दानों में से छह प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के वचन की शिक्षा में शामिल थे।* इस प्रकार का सम्बन्ध नज़रअन्दाज़ नहीं होना चाहिए। विश्वास, चंगाई और सामर्थ के कामों का अप्रत्यक्ष रूप से इस्तेमाल होता था। परन्तु दूसरे दान मसीह के राज्य के प्रारम्भ के लिए परमेश्वर के वचन की शिक्षा के लिए आवश्यक थे।

(1) ''बुद्धि'' जीवन की विभिन्न परिस्थितियों पर ज्ञात सत्यों की योग्यता थी।

(2) ''ज्ञान'' शिक्षा सम्बन्धी सत्यों के तथ्यों को सुनिश्चित करने की योग्यता थी।

(3) ''विश्वास'' पवित्र आत्मा की ओर से मिलने वाला वह दान था जिससे लोगों को अलौकिक काम करने की योग्यता मिली थी। ऐसे ही विश्वास की बात उसने भूतग्रस्त लड़के को चंगा करते हुए (मत्ती 17:14-21) और अंजीर के पेड़ को शाप देते हुए की थी। यह ''विश्वास'' एक चमत्कारी दान था, न कि वह विश्वास जो परमेश्वर का वचन सुनने से आता है (रोमियों 10:17)।

(4) ''चंगा करने का वरदान'' शारीरिक रोगों को दूर करने को कहा गया है।

(5) ''सामर्थ के काम'' मुर्दों को जिलाने (प्रेरितों 9:36-42) या सच्चाई की शिक्षा देने के रास्ते में रुकावट डालने वाले को अन्धा करने की शक्ति थी (प्रेरितों 13:8-11)।

(6) ''भविष्यवाणी'' परमेश्वर की ओर से सच्चाई को ग्रहण करने और ''उसके लिए,'' या ''उसकी ओर से'' बोलने की शक्ति थी। मूल यूनानी भाषा में ''भविष्यवक्ता'' उन शब्दों का मेल है जिनका अर्थ ''के लिए'' और ''बोलना'' है, इस प्रकार इसका अर्थ परमेश्वर ''के लिए बोलना'' है।

(7) ''आत्माओं की परख'' ऐसा दान था जिससे पता चल जाता था कि आत्मा की प्रेरणा से बोलने का दावा करने वाला सचमुच ही आत्मा की प्रेरणा से बोल रहा है या नहीं। आत्माओं की परख करने वालों को यह जानने की शक्ति दी जाती थी कि कोई किस

अधिकार से बोल रहा था अर्थात पवित्र आत्मा के अधिकार से या किसी दुष्ट आत्मा की ओर से। इसका लाभ विशेषकर आरम्भिक मण्डलियों में वहां हुआ जहां प्रेरित नहीं थे। आरम्भिक कलीसियाओं के पास पूर्ण रूप से नया नियम नहीं था जिससे कि वे शिक्षा देने वालों की बातों को परख सकते, इसलिए प्रत्येक मण्डली में ही कोई ऐसा व्यक्ति होता था जो इसके काम के लिए आलोचनात्मक ढंग से लाभदायक था।

(8) ''अनेक प्रकार की भाषा'' उन विदेशी भाषाओं को चमत्कारी ढंग से बोलने को कहा गया है जो संसार में पाई जाती हैं और बोलने वालों को पता नहीं होता था और न ही उन्होंने इन भाषाओं को कभी सीखा होता था। कलीसिया के आरम्भिक दिनों में प्रेरित ऐसे बोलते थे (प्रेरितों 2:4)। इन भाषाओं का इस्तेमाल फलस्तीन को छोड़कर अन्य देशों में होता था, क्योंकि सुनने वाले ने प्रेरितों को ''अपनी-अपनी जन्म भूमि की भाषा'' (प्रेरितों 2:8) बोलते और सुनते देखा था।

(9) ''भाषाओं का अर्थ बताना'' इन भाषाओं का अनुवाद वहां इकट्ठे हुए लोगों को समझाने के लिए उनकी ही भाषा में करना था। शायद इफिसुस की एक मण्डली में ऐसे लोग थे। जो यूनानी बोल सकते थे और दूसरे लोग केवल इब्रानी ही बोल सकते थे। यदि कोई शिक्षक यूनानी में बोलता, तो एक अनुवादक उस यूनानी भाषा को इब्रानी बोलने वाले श्रोताओं की सुविधा के लिए अनुवाद कर सकता था।

यह कहीं नहीं बताया गया कि इन दानों से, नये नियम के दिनों के आश्चर्यकर्मों से या इन दानों के पाने से किसी के पाप क्षमा हुए हों। न ही कहीं इसका अर्थ यह निकलता है कि दान पाने से किसी को प्रभु के राज्य में नया जन्म मिल गया हो। इन सभी आश्चर्यकर्मों और चिह्नों के उचित उपयोग का मुख्य ज़ोर यह था कि यह सचमुच परमेश्वर की ओर से थे।

प्रेरितों के काम में दिखाया गया आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य

प्रेरितों के काम की पुस्तक में बताया गया है कि परमेश्वर ने प्रेरितों के काम से वचन की पुष्टि की। प्रेरित पवित्र आत्मा से शक्ति पाकर काम में लग गए थे। प्रचार करते हुए नये-नये प्रकाशनों से, उन्होंने चिह्न, अद्‌भुत कार्य और आश्चर्यकर्म यह प्रमाणित करने के लिये किये कि वे प्रभु यीशु की ओर से बोल रहे थे।

प्रेरितों ने पिन्तेकुस्त के दिन लोगों में और भी स्पष्ट आश्चर्यकर्म किए थे, जो कि भरपूरी के साथ सुसमाचार के प्रचार और विश्वासियों के मन फिराने और बपतिस्मा लेने का आरम्भिक दिन था (प्रेरितों 2:4-11, 38, 41)। इस समय, आश्चर्यकर्म करते हुए लूका ने केवल प्रेरितों का ही उल्लेख किया। क्योंकि उन्होंने यह दान अन्य लोगों को देने के लिए किसी पर अभी हाथ नहीं रखे थे। एक लंगड़े आदमी को चंगा करने के बाद, पतरस को मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में प्रचार करने का अवसर मिल गया था (प्रेरितों 3:7-10; 4:14)।

बाद में, बहुत से लोगों को चंगा करने से शिक्षा देने और प्रेरितों को परमेश्वर द्वारा दी गई शक्तियों की पहचान कराने का एक और अवसर मिला (5:12-16) और इन आश्चर्यकर्मों के कारण कलीसिया में और बहुत से लोग मिलते गए (आयत 14)। स्तिफनुस की ज़ोरदार शिक्षा की पुष्टि उन आश्चर्यकर्मों से हुई जो उसने किए थे (प्रेरितों 6:8), क्योंकि प्रेरितों ने उसे आश्चर्यकर्म करने की शक्ति देने के लिए अपने हाथ उस पर रखे थे (आयत 6)। बहुत से लोगों ने ''सुनकर और जो चिह्न वह दिखाता था उन्हें देख देखकर'' (प्रेरितों 8:6) फिलिप्पुस के प्रचार पर विश्वास किया और उसे ग्रहण किया।

पतरस द्वारा दोरकास को मुर्दों में से जिलाने पर ''बहुतेरों ने प्रभु पर विश्वास किया'' (प्रेरितों 9:42)। उसके बाद पतरस को कुरनेलियुस के घर बुलाया गया। दो आश्चर्यकर्मों से इस बात की पुष्टि हो गई कि उसे अन्यजाति के घर में जाना चाहिए। पहला आश्चर्यकर्म स्वर्ग से एक पात्र के नीचे आने का दर्शन था। इस पात्र में (जो कि एक बहुत बड़ी चादर थी) सब प्रकार के जीव जन्तु थे जिन्हें मारकर खाने की पतरस को आज्ञा दी गई थी (प्रेरितों 10:9-16)। दूसरा आश्चर्यकर्म अन्यजाति के सेवकों के साथ जाने की आज्ञा देने का पवित्र आत्मा का स्वर था (प्रेरितों 10:17-20)। दोनों आश्चर्यकर्म असाधारण थे, क्योंकि इन्हें उसके अपने प्रेरितों पर परमेश्वर की इच्छा की पुष्टि के लिए इस्तेमाल किया था। सामान्यत: आश्चर्यकर्मों का इस्तेमाल यीशु में विश्वास न करने वाले लोगों को समझाने के लिए परमेश्वर के वचन की पुष्टि करने के लिए किया जाता था।

इससे घटित एक और असामान्य आश्चर्यकर्म हो गया; वास्तव में यह एक ही बार होने वाली घटना थी। परमेश्वर ने पतरस और उसके साथ जाने वाले छह भाइयों के साथ-साथ कुरनेलियुस और उसके घराने पर पवित्र आत्मा भेजकर अपनी इच्छाओं की पुष्टि कर दी। पवित्र आत्मा से सामर्थ पाकर, वे ''भान्ति-भान्ति की भाषा बोलने और परमेश्वर की बड़ाई'' करने लगे (प्रेरितों 44-46)। यह उनके मसीही बनने से पहले हुआ था। हैरानी की बात है कि अविश्वासी, अर्थात वे लोग जो अभी मसीही नहीं थे और यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में जानते भी नहीं थे, उन्हें परमेश्वर ने इस प्रकार इस्तेमाल किया; और यह इस अवसर पर आवश्यक भी था। जातिवाद की पूर्वधारणा वाले यहूदियों को, जिनमें पतरस भी शामिल था, यह समझाना था कि अन्यजातियों में प्रचार करना, उन्हें मसीह में बपतिस्मा देने और मसीह में भाइयों के रूप में उनके साथ संगति करना सही और उचित था। इसलिए, परमेश्वर ने अपने प्रेरितों तथा अविश्वासियों दोनों में ही ''वचन को दृढ़'' करने के लिए एक और आश्चर्यकर्म का इस्तेमाल किया।

अपनी आरम्भिक मिशनरी यात्रा में, पौलुस ने इलीमास नामक एक आदमी को अन्धा कर दिया था क्योंकि वह सत्य के वचन के प्रचार में रुकावट बन रहा था। प्रेरितों 13:12 कहता है कि ''सूबे ने जो हुआ था देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित होकर विश्वास किया।'' फिर, एक आश्चर्यकर्म से यह स्पष्ट हो गया था कि ये शिक्षाएं परमेश्वर की ओर से मिली शिक्षाओं की पुष्टि करती हैं।

पौलुस द्वारा फिलिप्पी में भविष्य बताने वाली एक शैतानी आत्मा को निकालने के कारण शहर में दंगा हो गया था। पौलुस और सीलास को अन्यायपूर्ण ढंग से जेल में डाल दिया गया था क्योंकि उस लड़की के स्वामियों ने देखा कि उस लड़की द्वारा मिलने वाला आर्थिक लाभ अब नहीं मिलेगा। पौलुस और सीलास को जेल में बंद करने से दरोगा और उसके परिवार को वचन सुनने का अवसर मिल गया (प्रेरितों 16:16-34)। वहां एक आश्चर्यजनक भूकम्प आया, जिससे जेल के द्वार खुल गए; और बाद की अद्‌भुत घटनाओं से दरोगा को समझ आ गई कि पौलुस और सीलास की बात उसे सुननी चाहिए।

अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा में, पौलुस को इफिसुस में उन आश्चर्ययकर्मों, जो उसके द्वारा हुए थे, शिक्षा देने के अद्‌भुत अवसर प्राप्त हुए। दुष्ट आत्माओं के शैतान के वश में होने के बावजूद बहुत से लोगों ने वचन को ग्रहण किया था (प्रेरितों 19:11-20)। पौलुस के हाथों से आश्चर्यकर्म करके परमेश्वर ने वचन को बढ़ाया और विजय दिलाई (आयत 19) अर्थात वचन के *प्रभाव* से बहुत से लोग मसीह को मानने लगे। इफिसुस के लोग पौलुस की बात सुनना चाहते थे। और उस शिक्षा को स्वीकार करना चाहते थे जो उसने दी थी। इन आश्चर्यकर्मों से उन पर वचन की गवाही हो गई थी। हम देखते हैं, कि आश्चर्यकर्म बहुत ही जटिल ढंग से सत्य के प्रकाशन से जुड़े हुए थे।

इन आश्चर्यकर्मों की वास्तविकता पर किसी ने प्रश्न नहीं उठाया, क्योंकि उनके परिणाम स्पष्ट थे। उनसे यह प्रमाणित हुआ कि प्रेरित और अन्य लोग परमेश्वर के प्रभावाधीन थे और, इसलिए, जो बातें वे सिखाते थे, वे परमेश्वर की ओर से ही थीं। आश्चर्यकर्मों से वचन की पुष्टि हुई और सिखाने वालों की यथार्थता का पता चला। आश्चर्यकर्म का इस्तेमाल एक बार भी पाप क्षमा करने के लिए नहीं हुआ और न ही आश्चर्यकर्म का इस्तेमाल किसी को नया जन्म दिलाने के लिए हुआ था। आश्चर्यकर्म को पाने वाला कोई भी व्यक्ति कहीं मसीही नहीं बना।

हर एक प्रेरित के पास ऊपर बताए गए सभी नौ दान थे और वह इन सभी आश्चर्यकर्मों को कर सकता था।[2] फिर, प्रेरित दूसरों पर हाथ रखकर उन्हें आश्चर्यकर्म करने की योग्यताएं भी दे सकते थे (प्रेरितों 8:14-17)। दूसरा कोई भी किसी को यह दान आगे नहीं दे सकता था। उदाहरण के लिए, यरूशलेम में प्रेरितों को पतरस और यूहन्ना को सामरिया में ये दान देने के लिए भेजना पड़ा, बेशक फिलिप्पुस वहां था। फिलिप्पुस केवल आश्चर्यकर्म कर सकता था, परन्तु वह एक प्रेरित नहीं था; इसलिए, वह आगे किसी को भी ये दान नहीं दे सकता था। नये बने एक मसीही, शमौन ने देखा कि प्रेरितों के पास दान देने की योग्यता थी, और उसने वह अद्‌भुत शक्ति उनसे खरीदनी चाही। पतरस ने उसे बताया कि परमेश्वर के ऐसे कामों में उसका कोई भाग नहीं था (वह एक प्रेरित नहीं था) और उससे लालच के बुरे व्यवहार के लिए मन फिराने का आग्रह किया (प्रेरितों 8:18-24)।

नौ दानों की सूची प्रकाशन के सम्पूर्ण और आरम्भिक मण्डलियों की सुरक्षा की परमेश्वर की योजना का प्रमाण देती है। किसी प्रेरित की अनुपस्थिति में, जैसे कुरिन्थुस

की कलीसिया के साथ हुआ जब पौलुस ने अपनी यात्रा जारी रखी, तो जरूरी था कि कलीसिया को झूठे शिक्षकों से बचाने और सुसमाचार की शिक्षा देने के काम को जारी रखने के लिए आत्मा की प्रेरणा प्राप्त किसी व्यक्ति को छोड़ा जाए। अभी उनके पास पूरा नया नियम नहीं था।

आज कलीसियाओं की रक्षा और सुधार केवल लिखित वचन के इस्तेमाल से ही हो सकते हैं। यह सम्पूर्ण है और उतना ही है जितनी हमें आवश्यकता है। यह वह विश्वास है ''जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' (यहूदा 3)। पौलुस के समय लिखित वचन उपलब्ध नहीं था, इससे पता चलता है कि आत्मा के दानों का इस्तेमाल इन आरम्भिक मण्डलियों के सुधार एवं सुरक्षा के लिए होता था। स्पष्टतया, मण्डलियों में छोड़ा गया एक प्रेरित इन सभी नौ दानों का एक साथ इस्तेमाल कर सकता था। ये दान सभी सदस्यों में बांट दिए जाते थे (1 कुरिन्थियों 12:7, 11)। प्रेरितों के अलावा किसी और के पास ये सभी नौ दान नहीं थे, और हर एक मसीही को आश्चर्यकर्म का दान नहीं मिला था (1 कुरिन्थियों 12:29, 30)। परन्तु, सभी नौ दान, निश्चय ही हर एक कलीसिया में थे।

आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य पूरा हुआ

परमेश्वर की ओर से प्रकाशन की एक बार पुष्टि होने के बाद, इसकी फिर से पुष्टि करने की आवश्यकता नहीं थी। परमेश्वर की ओर से मिले चिह्नों ने अपना काम कर लिया और प्रेरितों के वचन की पुष्टि की (मरकुस 16:20)। शिक्षा चाहे मौखिक थी या लिखित, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; यह वही सच्चाई है और इसकी पुष्टि हो चुकी है।

कलीसिया को अब और आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता नहीं है। चिह्नों का उद्देश्य पूरा हो चुका है अर्थात वचन दृढ़ हो चुका है। इस पुष्टि ने आश्चर्यकर्म करने की योग्यताओं को धीरे-धीरे बन्द करने में सहायता की। जो लोग आज भाषाएं बोलने और आश्चर्यकर्म करने का दावा करते हैं, वे अधिकतर यीशु के समय के यहूदियों की तरह हैं। वे यहूदी व्यवस्था के साथ चिपके रहना चाहते थे जो पुरानी पड़ चुकी थी (इब्रानियों 8:13) क्योंकि उसने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया था (लूका 24:44, 45)। उसी प्रकार, आश्चर्यकर्म करने का दावा करने वाले आधुनिक लोग ऐसे समय और उन कामों से चिपके रहना चाहते हैं जिनका उद्देश्य पहले ही पूरा हो चुका है। 1 कुरिन्थियों 13:8-10 में परमेश्वर की ओर से मिलने वाले प्रकाशनों के पूरा हो जाने पर पौलुस ने भी भविष्यवाणी की कि आश्चर्यकर्म बन्द हो जाएंगे।

केवल प्रेरित ही आश्चर्यकर्म के दान आगे दे सकते थे, और आज ऐसा करने के लिए कोई भी प्रेरित उपलब्ध नहीं है। प्रेरितों 2 अध्याय और प्रेरितों 10 अध्याय में उन दो अवसरों का वर्णन किया गया है, जब प्रेरितों के हाथ रखने के बिना आत्मा के दान सीधे परमेश्वर से मिले। पतरस ने इन घटनाओं को ''वही दान'' (प्रेरितों 11:17) कहा; दोनों ही घटनाओं को पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का समय बताया कहा गया है (मत्ती 3:11;

प्रेरितों 11:15-17)। इस प्रकार के बपतिस्मे से उन अवसरों पर इकट्ठे हुए लोगों में से किसी को भी उसके पापों से उद्धार नहीं मिला, न ही इससे कोई मसीही बना। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का तो उद्देश्य ही अलग था: इसने प्रेरितों को अपना काम करने के लिए शक्ति देकर प्रभु की इच्छा को पूरा किया, और यहूदी लोगों में यह प्रमाणित किया कि उन्हें एक समान आधार पर अन्यजातियों को मसीह में स्वीकार कर लेना चाहिए। दोनों ही अवसरों पर, इस बपतिस्मे का इस्तेमाल युगान्तर को प्रभावित करने के लिए किया गया था।

इससे तीन निष्कर्ष निकलते हैं कि परमेश्वर आज आश्चर्यकर्मों का इस्तेमाल क्यों नहीं कर रहा है: (1) आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य पूरा हो चुका है। (2) मसीह के सुसमाचार प्रकाश के पूरा होने पर आश्चर्यकर्म बन्द हो जाने चाहिए, जैसे पौलुस ने आत्मा की प्रेरणा से भविष्यवाणी की थी। (3) इन नौ दानों को पाने का माध्यम अब उपलब्ध नहीं है, क्योंकि सभी प्रेरित मर चुके हैं।

सारांश

केवल परमेश्वर का वचन ही पापियों को पाप के दासत्व से छुड़ा सकता है (यूहन्ना 8:31, 32)। प्रेरितों के काम ही एकमात्र ऐसी पुस्तक है जिसमें बताया गया है कि लोगों को सच्चाई कैसे सिखाई गई, कैसे परमेश्वर की सामर्थ से उस सच्चाई में भरोसा दिलाने के लिए आश्चर्यकर्म किए गए और लोग उस सच्चाई की आज्ञा मानकर परमेश्वर के अनुग्रह में प्रवेश कर पाए।

पाद टिप्पणियां

[1]बाद के इन लेखों में 1, 2 तीमुथियुस; तीतुस; इब्रानियों; 1, 2 पतरस; 1, 2, 3 यूहन्ना; यहूदा; और प्रकाशितवाक्य शामिल हैं। [2]प्रत्येक प्रेरित के पास नौ दान तो थे ही। पौलुस ने "एक सच्चे प्रेरित के चिह्नों के लिए" बहुवचन योग्यताओं का उल्लेख किया, जिससे वह दूसरे प्रेरितों की तरह ही प्रमाणित हुआ (2 कुरिन्थियों 12:11, 12)। ये नौ दान कुरिन्थुस में पाए जाते थे (1 कुरिन्थियों 12:7-11) और कुरिन्थुस में प्रेरित केवल पौलुस ही था, इसलिए कलीसिया के सदस्यों को दान इस प्रेरित के द्वारा ही मिले होंगे।